विश्व टीकाकरण (प्रतिरक्षण) दिवस

टीका प्रतिरक्षण वह प्रक्रिया है जिसमें टीका करण कर अनेक संसर्गजन्य रोगों से संरक्षित किया जा सकता है, तथापि रोग प्रतिकात्मक शक्ति को बढ़ाया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि टीके स्वयं की रोग प्रतिकात्मक शक्ति उत्पन्न करते है एवं विभिन्न रोगों से संरक्षण करते है। संपूर्ण विश्व में विभिन्न प्रकार के रोग प्रतिबंधक करने हेतु टीकाकरण यह सर्वाधिक उत्तम साधन माना गया है।

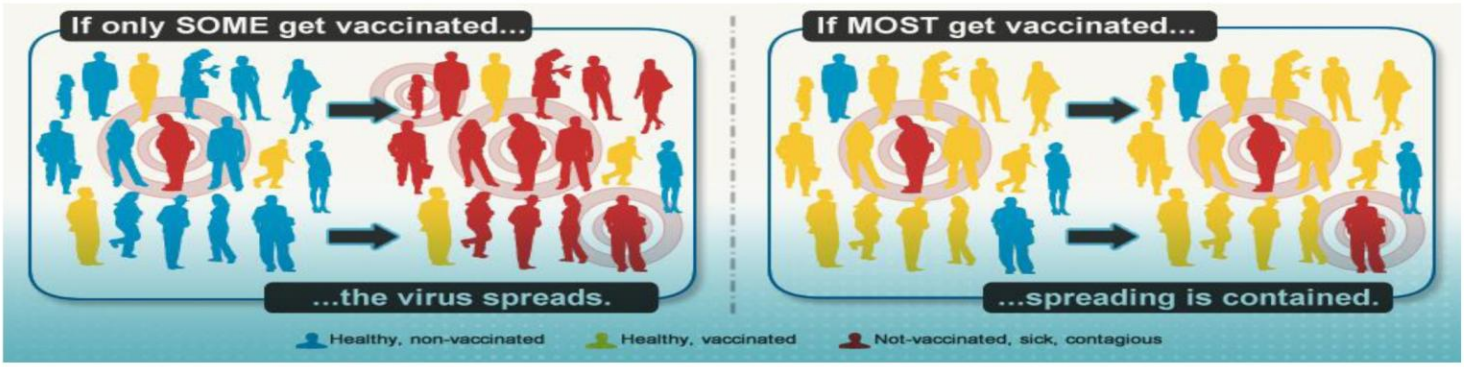

भारतीय प्रतिरक्षण मार्गदर्शक अनूसूची

बीसीजी (बॅसिलस कॅलमेट गुएरिन): जन्म होने पर (तुरंत न दिये तो १ वर्ष में कभी भी दिये तो चल सकता है)
डीपीटी (डिप्थेरिया परटयुसिस टिटनस टॉक्साईड): कुल पाँच मात्राः प्राथमिक ३ मात्रा यह ६.११ एवं १४ वे सप्ताह में एवं दो बुस्टर मात्रा १६ व २४ व महीने में एवं एक-एक वर्ष बाद
ओपीव्ही (ओरल पोलियो व्हॅक्सीन): ५ मात्रा प्रथम जन्म होने पर तथापि बाद की ३ मात्रा ६, १० एवं १४ वे सप्ताह मे एवं बुस्टर मात्रा १६ वे महीने में
हेपॉटाइटिस 'बी' लसः ४ मात्रा, प्रथम मात्रा जन्म होते ही २४ घंटे के भीतर एवं अन्य ३ मात्रा ६, १० एवं १४ सप्ताह में
मेसल : २ मात्रा, प्रथम ९-१२ वे महिनें तक और दुसरी १६-२४ महिने में
टी टी (टेटेनस टाकसाईड) : २ मात्रा १० एवं १६ वे वर्ष में

मुख्य उद्देश्यः

- कर्करोग, डिप्थरिया, हिपाटाइटिस बी, मेसल्स, मम्स, परटूसिस, न्यूमोनिया, पोलियो, अतिसार, रूबेला व टेटनस के समान रोगों से संरक्षण प्रदान कर अनेको का जीवन टीकाकरण से बचता है।
- विश्व स्तर पर टीकों का उपयोग होने के साथ साथ खोज किये गये नयें टीकों का चलन बढ़ा है।
- टीकाकरण के कारण २ से ३ अरब लोगों का जीवन बच पाया है।
- किंतु आज भी १८.७ अरब छोटे बच्चे टीकाकरण से वंचित है।

टीकाकरण का अंतर मिटाये...

टीकाकरण सबके लिये

विश्व टीकाकरण योजना का मुख्य उद्देश्य ही यही है कि वर्ष २०२० तक विश्व में कहीं भी रहने वाले नागरिक टीका उपलब्ध होने वाले रोग से ग्रसित ना हो।

आज विश्व स्तर पर ५ में से १ शिशु / बालक टीकाकरण के वरदान से वंचित रह रहा है।

Reference

- http://nrhm.gov.in, http://www.who.int/topics/immunization/en/

Issued in Public Interest by Maharashtra State Pharmacy council's Drug Information Center